सृजन

वार्षिक पत्र — हिन्दी विभाग, सेट बीडज़ कॉलेज, शिमला

संस्करण 1

वर्ष 2015

सृजन

सृजन सृष्टि का आदि व कारक तत्त्व है। जोकि काल की गतिमयता को विकसित करता चलता है। सृजनमयता के कारण ही संसृति सजीव है। ईश्वर ने अनादिकाल में पर्वत, नदी, वृक्ष, फूल, जीव व प्राणियों का सृजन किया तो जीवन की धारा बह निकली। नारी ने शिशु का सृजन किया तो सृष्टि किलकारियों से गूंजने लगी। ज्ञानियों ने वेद-वेदांगों का सृजन किया तो ज्ञान के अक्षुण्ण प्रकाश से अज्ञानता का अंधकार धीरे-धारे छंटता चला गया। अनन्त काल से जीवन के हर क्षेत्र में सृजन होता चला जा रहा है तभी जीवन दिन प्रति दिन खिलता चला जा रहा है। सृजन का ही दूसरा नाम विकास है।

हर व्यक्ति में सृजन की यह शक्ति किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है। छात्राओं की लेखन सृजनात्मकता का परिचय इस पत्र में रमणीय शैली में हुआ है। आप इससे अवगत भी होंगे और आह्लादित भी।

डॉ संगीता सारस्वत
हिन्दी विभाग

वर्ष का शुभारम्भ

हिन्दी दिवस

राष्ट्रभाषा-मातृभाषा हिन्दी के सम्मान में हर वर्ष यह दिवस 14 सितम्बर को महाविद्यालय में मनाया जाता है। केवल यहीं नहीं बल्कि देश के हर कार्यालय एवं शिक्षण संस्थान में इसे पर्व के रूप में आयोजित किया जाता है। कहीं हिन्दी-सप्ताह, कहीं हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। विदेशों में भी बहुत उत्साह के साथ अनेक संगोष्ठियां की जाती हैं। भारत में स्थान-स्थान पर कवि-सम्मेलन होते हैं। यह सब इसलिए होता है कि हम यह न भूलें कि हिन्दी हमारी मातृभाषा, बोलचाल की भाषा एवं रोजमर्रा की भाषा है। हमें इसे सीखने और इसमें पारंगत होने में गौरव अनुभव करना चाहिए। हम विश्व के किसी भी कोने में चले